International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 08 Issue: 09 | Sept - 2024 SJIF Rating: 8.448 ISSN: 2582-3930

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का नारी विमर्श

सुचि जैन

एम.एड

बैकुंठी देवी कन्या महाविद्यालय

बालूगंज आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश - डॉ राधाकृष्णन ने अपने जीवन में महिलाओं की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये। वे चाहते थे की महिलाएं और पुरुष दोनों को समान रूप से शिक्षा पाने का अधिकार है। वह भेदभाव की नीति को अस्वीकार करते थे। उनके अनुसार यदि समाज को बेहतर बनाना है तो हमें महिलाओं को शिक्षित करना ही होगा। जिससे उनका चारित्रिक विकास, मस्तिष्क का विकास व समाज में उनकी एक नई पहचान बन सके। उन्होंने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य भी किए। उन्होंने पाठ्यक्रम के संबंध में नवीन विचार दिए कि यदि महिलाओं को गृहशास्त्र, पाकशास्त्र, नीतिशास्त्र, आदि जैसे विषयों का अध्ययन कराया जाए तो वह समाज तथा अपने परिवार का अच्छे ढंग से विकास कर सकती हैं। अतः हमें महिलाओं को शिक्षित करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द- स्त्री शिक्षा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

"हमारी माताओं, पत्नियों, बहनों और बेटियों की सक्रिय भागीदारी के बिना हमारी भूमि की प्रगति हासिल नहीं की जा सकती है।

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

- **प्रस्तावना** - डॉक्टर राधाकृष्णन के अनुसार , स्त्रियों को भी समान शिक्षा के अवसर मिलने चाहिए जिससे देश में उनका समुचित रूप से विकास हो सके। उनका ऐसा मानना था कि स्त्रियों के अंदर असीमित अंतर्निहित क्षमताएं निहित होती हैं और उन्हें अपनी इन अंतर्निहित क्षमताओं के विकास के अवसर अवश्य मिलनी चाहिए वह कहते थे कि स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों की शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार में शांति स्थापना व बच्चों का पालन पोषण करने में स्त्रियों का ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान होता है अतः स्त्रियों की शिक्षा को उन्होंने सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया हमें स्त्रियों की शिक्षा के लिए कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है अपितु हमें उनकी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में इस की अत्यंत आवश्यकता है वहां के निवासियों को जागरूक करना तथा इस वहां की स्त्रियों को शिक्षा के उचित अवसर दिलाना हमारा परम कर्तव्य है। सन 1958 में महिला शिक्षा निमित्त एक राष्ट्रीय समिति बनाई गई जिसके फलस्वरूप नारी शिक्षा के लिए और अधिक प्रचार व प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ राधाकृष्ण की शिक्षा नीति केवल व्यक्तिगत मान्यताओं पर ही आधारित नहीं होती थी वह पूर्ववर्ती व समकालीन अन्य विभूतियों शिक्षा संबंधी विचारों से अत्यंत प्रभावित होते थे वह पूर्ववर्ती विभूतियां जैसे कालिदास, गुरु नानक स्वामी दयानंद सरस्वती राजा राममोहन राय गोपाल कृष्ण गोखले बाल गंगाधर तिलक मोतीलाल नेहरू तथा लाला लाजपत राय से अत्यंत प्रभावित है इसके साथ ही सरदार बल्लभ भाई पटेल डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद और मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसे समकालीन चिंतकों का भी उनकी शिक्षा नीति पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ा यहां तक कि उनके द्वारा रचित कृति लिविंग विद नामक अपनी पुस्तक में इन्होंने इन सभी महान विभूतियों के प्रति ऋणी होने का उल्लेख किया है।

जीवन परिचय

- डॉ राधाकृष्णन हमारी भारतीय संस्कृति के सुप्रसिद्ध शिक्षाविद और महान संवादक के रूप में जाने जाते हैं। भारत के उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति के रूप में डॉक्टर राधाकृष्णन का नाम भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाता है।यह दर्शनशास्त्र का भी बहुत ज्ञान रखते थे, अतः उन्होंने भारतीय दर्शनशास्त्र में पश्चिमी सोच की शुरुवात की थी। राधाकृष्णन प्रसिध्य शिक्षक भी थे। शिक्षा और राजनीति में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए डॉ. राधाकृष्णन को सन 1954 में सर्वोच्च अलंकरण "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया। इंग्लैंड सरकार द्वारा इनको "आर्डर ऑफ़ मेंरिट" का सम्मान प्राप्त हुआ।17 अप्रैल 1975 को एक लम्बी बीमारी के बाद डॉ राधाकृष्णन का निधन हो गया। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान हमेंशा याद किया जाता है। यही वजह है, कि उनकी याद में हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रुप मे मनाया जाता है।
- डॉक्टर राधाकृष्णन के अनुसार हम ऐसे युग में रह रहे हैं जहां महिलाओं के लिए शिक्षा सामाजिक कार्य व प्रशासन के क्षेत्र में महान अवसर प्रदान किए गए हैं अतः समाज में ऐसी महिलाओं की आवश्यकता है जिनका मस्तिष्क अनुशासित हो उनका व्यवहार संयमित हो वह ऐसा मानते थे कि जब आप किसी भी कार्य को करते हैं यदि उस कार्य को इमानदारी व अनुशासित मस्तिष्क द्वारा किया जाता है तब हम उस कार्य में अवश्य सफल हो जाते हैं और हमें उस कार्य को करने के प्रति आनंद की अनुभूति होती है यदि हम अपने देश की बात करें तो महिलाओं के लिए शिक्षा के पर्याप्त रूप से विस्तृत नहीं है यह एक चिंता का विषय बना हुआ है इसलिए हमारे समाज में जो संस्थान महिलाओं को शिक्षा में सहयोग प्रदान करते हैं। वह संस्थाएं पहचान व प्रोत्साहन पाने के योग्य है डॉ राधाकृष्णन के विचार महिला शिक्षा के संबंध में अत्यंत गहराई वाले थे वह चाहते थे कि महिलाओं को जो शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है वह विस्तृत होने के साथ-साथ गहरी भी होनी चाहिए जिससे महिलाएं विद्वान व कौशल युक्त बन सके और समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें अतः आवश्यकता है कि एक लक्ष्य निर्धारित किया जाएजिससे हम अपने जीवन को अंधकार पूर्ण होने से बचा सके यदि हमारा मस्तिष्क सुसंस्कृत होगा तो हम अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्र चित व लगन शील होंगे अन्यथा हमारा जीवन कई दिशाओं में बिखर जाएगा और हम लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाएंगे अतः जो संस्थाएं महिलाओं की शिक्षा में सहयोग करती हैं उन्हें शिक्षा के साथ-साथ महिलाओं को एक लक्ष्य निर्धारित करने के लिए कौशल युक्त बनाने की आवश्यकता है लक्ष्य इस प्रकार निर्धारित करना चाहिए जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं तथा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करता हो क्योंकि कई वर्षों पहले जो लक्ष्य निर्धारित किए गए वह आज के समय के अनुसार सही हो यह आवश्यक नहीं है क्योंकि परिवर्तन ही संसार का नियम है
- डॉ राधाकृष्णन ने स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए समान शिक्षा के अधिकार को बढ़ावा देने की बात की उनके अनुसार समानता का तात्पर्य है कि स्त्री व पुरुष को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए उन्होंने सन 1949 के अंतर्गत विश्वविद्यालय कमीशन में स्त्रियों के लिए अलग से पाठ्यक्रम की का वर्णन किया पाठ्यक्रम के अंतर्गत गृह शास्त्र शास्त्र नीतिशास्त्र धर्मशास्त्र आदर्श एवं चरित्र के विकास के लिए हस्तकला वह ललित कलाओं का ज्ञान देना स्त्रियों की शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है

निष्कर्ष

डॉ राधाकृष्णन एक महान दार्शनिक थे उनके स्त्री शिक्षा के संबंध में उचित विचारों को जानने के पश्चात हमें उसे अपने जीवन में अनुप्रयोग करना चाहिए डॉ राधाकृष्णन ने शिक्षा के क्षेत्र में भेदभाव ना करते हुए स्त्री व पुरुष दोनों की शिक्षा को महत्व दिया है उन्होंने अपनी शिक्षा दर्शन में चारित्रिक शिक्षा पर मूल रूप से जोड़ दिया है इसलिए उन्होंने ऐसी चरित्र की शिक्षा पर जिससे उनमें जनतांत्रिक गुण उत्पन्न हो और वह देश के विकास में योगदान दे सकें। अतः शिक्षा का लक्ष्य पुरुषों व महिलाओं को योग्य बनाना है उनमें ऐसा चिंतन ध्यान तथा अंतर्दृष्टि विकसित करना है जिससे वह विश्व राज्य के भी अच्छे नागरिक बन सकें इस विचार को सभी देशों में पालन करने की आवश्यकता है तभी इस पृथ्वी पर शांति और ईश्वर की स्थापना की जा सकती है।

संदर्भ

- https://en.m.wikipedia.org
- https://www.jagran.com
- http://www.hindikiduniya.com
- भारतीय शिक्षा दर्शन डॉक्टर रामनाथ वर्मा
- समकालीन भारतीय शिक्षा दर्शन मणि शर्मा एचपी भार्गव बुक हाउस।
- समकालीन भारत एवं शिक्षा डॉ वंदना सक्सेना डॉक्टर सविता सिंह राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।